शिक्षानुभव से शिक्षानुभूति की और...

डॉ. हर्षाबा बी. जाडेजा, व्याख्याता, श्रीमती बी. सी. जे कालेज ओफ एज्युकेशन, खंभात

सारांश - किसी भी शिक्षा प्रणाली का आधार शिक्षा व्यवहार है। हमारा आज का शिक्षा व्यवहार केवल अध्ययन अनुभवो पर निर्भर है। अनुभव का संबंध इन्द्रियों के साथ है, इंद्रियाँ मनोवृत्ति के इशारे चलती है। इस तरह अनुभव बाहुल्य और वैविध्य को अच्छी शिक्षा मानी जाती है। इस शिक्षा व्यवहार से अध्येता का केवल मन और बुध्दि ही प्रभावित होतें है। शिक्षित व्यक्ति भी क्रिया- प्रतिक्रिया, इर्ष्या, महत्वाकांक्षा, स्पर्धा आदि विकारों से मुक्त नहीं होती और प्राप्त ज्ञान, कौशलो को केवल वृति आधारित मुखोपभोग प्राप्ति अर्थे विनियोग करती है। मनुष्य जीवन का अंतीम ध्येय मुक्ति का है। मनुष्य आंतर्बाह्य विकारों से मुक्त होकर स्वस्थ जीवन में स्थित होता है। व्यक्ति की इस ध्येय प्राप्ति में सहायता करना शिक्षा का उत्तरदायित्व बनता है। भारतीय चिन्तन उपयुक्त विचार का अनुमोदन करता है - 'सा विद्या या विमुक्तये।

सांप्रत शिक्षा प्रणाली में मुक्ति का ध्येय तो सम्मिलित है किन्तु इस में सफलता नहीं पाई जाती। इस निष्फलता का कारण क्या है ? और इसका उपाय क्या है ? इन प्रश्नों का चिन्तन हमारे आधुनिक चिंतकोने भी किया है। प्रस्तुत अभ्यासपत्र हमारी इस सदी की स्त्री चिन्तिका ***विमला ठकार*** के चिंतन पर आधारित है। जो सांप्रत शिक्षा को अवश्य मार्गदर्शित करेंगे। प्रस्तुत अभ्यासपत्र का मुख्य उद्देश भी वही है।

चाबीरूप शब्द **(KEY WORDS)- शिक्षा व्यवहार, अनुभव, अनुभूति**

प्रस्तावना

सांप्रत शिक्षा प्रणाली को अनुभव से अनुभूति के प्रति ले जाना शिक्षक प्रशिक्षण का कार्य बनता है। जब शिक्षा व्यवहार में अनुभव के बदले अनुभूति को केन्द्र में रखा जायेगा तब शिक्षा अपने ध्येय में सफल होगी। अनुभूति की शिक्षा से अध्येता के सत्त्व से संबंधित होती है। यहाँ अध्येता के सत्त्व का रुपांतरण शक्य होता है। शिक्षित व्यक्ति को विकारों से मुक्ति और जीवन आनंद की उपलब्धि होती है। पर यही हमे पहेले अनुभव आधारित शिक्षा व्यवहार को समजना होगा।

शिक्षा अनुभव: हमारा प्रवर्तमान शिक्षा व्यवहार केवल अनुभवलक्षी है। पश्चिम मनोविज्ञान के अध्ययन सिद्धांतो को आधार बनाता है। पावलोव, स्कीनर, हल, थोर्नडाइक आदि मनोवैज्ञानिको ने प्राणीओं पर प्रयोग करके सिद्धांत दीये है जो वृत्ति आधारित है। प्राणीओं के वर्तन को आधार बनाकर मानव अध्ययन कैसे संभव है ?! वास्तव में इसतरह का शिक्षा व्यवहार मानव अध्ययन नहीं है केवल क्रिया-प्रतिक्रिया (Action - Reaction) है। इसतरह अनुभव स्वयं भूतकाल है. व्यक्ति को भूत-भविष्य में रखकर वर्तमान से विमुख करता है। अनुभव व्यक्ति के अहं और परिस्थिति की अंत क्रिया की फलश्रुति है। जो चित में संचित होती है।

अनुभव 'आधारित शिक्षा से लाभान्वित व्यक्ति ज्ञान और कौशलों को हस्तगत करके संचित करता है। यह संचित संपत्ति का मालिक होकर अपने अहं को पुष्ट करता है। अहं पुष्टि ही बंधन का मूल है। इस संपत्ति से वह आर्थिकोपार्जन, साधन-सुविधा, सत्ता, प्रतिष्ठा की प्राप्ति करता है। किन्तु अस्वस्थ, अशांत, महत्त्वाकांक्षी, स्पर्धात्मक मनोदशा से मुक्त नहीं हो सकता। क्योंकी हमारी शिक्षा मुक्त होना नहीं सिखाती। क्रिया के प्रति प्रतिक्रिया सिखाकर अहं को बढ़ावा देती है। इसीलिए हमारे यहाँ शिक्षित और अशिक्षित व्यक्ति की मनोदशा में ज्यादा फर्क मालूम नहीं पडता। अशिक्षित व्यक्ति की तुलना में शिक्षित व्यक्ति ज्यादा अस्वस्थ, चिंतित, अशांत मालूम पडता है। सांप्रत शिक्षा की निष्पत्ति से हमे पता चलता है कि आधुनिक शिक्षा व्यक्ति के सत्त्व रूपांतरण के ध्येय से विमुख है।

शिक्षा से संबंधित हम सब का उत्तरदायित्व है कि आधुनिक शिक्षा को अपने ध्येय प्रति अभिमुख करें। दर्शन शिक्षा को हमेशां मार्गदर्शित करता है। हमारी भारतीय दार्शनिक परंपरा अत्यंत समृद्ध है। प्राचीन ऋषियोंने मनुष्य जीवन और समाजजीवन का दिशादर्शन किया है। हमारे आधुनिक चिंतक भी प्राचीन परंपरा का अनुमोदन कर के अपना मौलिक चिन्तन प्रकट करते है। ***विमला ठकार*** प्रवर्तमान सदी की स्त्री दार्शनिका है। विमला ठकार के चिन्तन से प्रकट शिक्षादर्शन में शिक्षा सत्त्व रुपांतरण और शुद्धीकरण प्रक्रिया बनती है। अनुभव से पर अनुभूति तक विस्तृत होकर सत्त्व को संस्पर्शती है और मनोविकारों से मुक्ति दिला सकती है। प्रस्तुत शोधपत्र में अनुभूति आधारित शिक्षा के लिए एवं पाठ परियोजना का प्रारूप फलितार्थ निर्देशित कीया गया है।

शिक्षानुभूति: संकल्पना, सार्थक्य, शिक्षा व्यवहार और पाठयोजना प्रारुप :

संकल्पना **:** व्यक्ति के 'स्व' और परिस्थिति की अंतःक्रिया में अनुभूति घटित होती है। अनुभूति का संबंध वर्तमान से है। अनुभव में परिस्थिति के साथ 'अहं' अंतःक्रिया करके कुछ संचित करता है। अनुभूति में कुछ संचय नहीं होता वह स्वयं प्रवाहीत है। अनुभव अहं केन्द्रित मन की क्रिया-प्रतिक्रिया (Action Reaction) की प्रक्रिया है जब अनुभूति 'स्व' के संबंध से घटित प्रतिसाद (Response) देनेवाली मन की अवस्था है। यहाँ शिक्षानुभूति से मतलब है कि अध्येता का 'स्व' (self) और परिस्थिति का योग। विमला ठकार निर्देशित अनुभूति आधारित शिक्षा में व्यक्ति का मन अहं और विकारों से मुक्ति पाकर शुद्ध अवस्था में रुपांतरित होता है।

सार्थक्य: हमने देखा कि अनुभव आधारित शिक्षा में व्यक्ति ज्ञान और कौशलों की सहाय से भौतिक सुख सुविधा प्राप्त कर लेता है किन्तु उनका आंतरिक विकास नहीं होने से शिक्षा एक पक्षीय हो जाती है। अनुभूति आधारित शिक्षा व्यक्ति को आंतरिक उवकरण में सहाय करती है। जीवन में आंतरिक और बाह्य दोनो पक्षो का समुचित विकास जरुरी है। आज की शिक्षा में यह क्षमता नहीं है। अनुभूति की शिक्षा को जोडने से व्यक्ति का समुचित विकास शक्य बनता है। अनुभूति की शिक्षा पाकर व्यक्ति स्पर्धा, महत्त्वाकांक्षा जैसी अहं केन्द्रित क्रियाओं से मुक्त होगा और शांत, स्वस्थ मनोदशा तथा उर्जाशील अस्तित्व की उपलब्धि करेगा। ऐसा पीडामुक्त और आनंदित व्यक्ति ही स्वस्थ समाज की रचना कर सकता है। आजतक शिक्षाजगत को केवल शरीर, मन, बुद्धि की शक्तियों का ही परिचय है। अनुभूति की शिक्षा से मुक्त होनेवाली वैश्विक ऊर्जा, जीसे भारतीय चिन्तन में 'प्रज्ञा' कहा गया है उनका परिचय होगा। इससे शिक्षा में परिवर्तन और अनुसंधान का क्षेत्र खुलेगा। इसी तरह अनुभव की शिक्षा के साथ अनुभूति की शिक्षा को जोड़कर हम उत्तम मनुष्य. स्वस्थ सामाजिक जीवन और गुणवत्तासभर मानवजीवन की अभिलाषा कर सकते हैं।

शिक्षा व्यवहार **:** अनुभूति आधारित शिक्षाव्यवहार में 'अनुभूति' केन्द्र स्थान में है। यहाँ केवल अध्येता के बुद्धि और मन जो मात्र उनका एक हिस्सा है, वह नहीं जूडता। यहाँ तो अध्येता का 'स्व' समग्रतया सामिल होता है। तथ्य और 'स्व' संबंधित होता है। शिक्षा व्यवहार अनुभूति के माध्यम से स्व का संस्पर्श करता है तभी शिक्षा सत्त्व रुपांतर की, मुक्ति की प्रक्रिया बनती है। स्व और तथ्य (परिस्थिति) का मिलन तभी संभव है जब अहं की गति का शमन हो। इसलिए शिक्षा व्यवहार दौरान हमें अध्येता में ऐसी सभानता निर्मित करनी है जो अपने अहं की गति को पहेचाने और शमन का प्रयास करें। इसी तरह शिक्षा व्यवहार अंतर्गत हमे अध्येता को अहं के क्रिया-प्रतिक्रिया के क्षेत्र से मुक्त करना है और अध्येता के स्व का तथ्य से संबंधित कर के स्व की शक्तियों को जगाना है तथा अध्येता को गुणवत्तायुक्त जीवन के लिए तैयार करना है।

अध्यापनशास्त्र और शिक्षा व्यवहार में सुधार, परिवर्तन और नावीन्य प्रदान करना शिक्षण -प्रशिक्षण का कार्य है। अनुभूति आधारित शिक्षा व्यवहार कक्षा अध्ययन में कैसे ले जा सकते है यह बताने के लिए पाठयोजना का परिरुप (ढाँचा) उदाहरणार्थे यहाँ सामिल किया गया है।

पाठयोजना (प्रारुप)

सामान्य उद्देश :

- छात्र अपनी आदतें और मनोगति प्रति सभान बनें।
- छात्र भूत, भविष्य से मुक्त होकर वर्तमान में एकाग्र बनें।
- छात्र अनुभूतिबोध दौरान अपनी जिसासा, तप, अवधान, निरीक्षण, सभानता, संवेदनशीलता जैसी शक्तियों को विकसित करें।
- छात्र प्रतिक्रियान्वित ऊर्जाओं का व्यवस्थापन करें।

वर्गव्यवहार निर्देशित तालिका :

क्रम	उदाहरण	माध्यम	प्रवृत्ति	अनुभूति अंतर्गत विकसित शक्तियाँ
1.गुजराती	थोड़ो वगड़ानो श्वास मारा श्वासमा। पहाड़ोंना हाड मारा पिंडमाँने नाड़ीमाँ नानेरी नदीओ ना नीर...	प्रकृति	शरीर की साहजिक गति का अवलोकन प्रकृति के तत्त्व नदी, पर्वत के लय को एकाग्रता से सुनना	संवेदनशीलता, अवधान, सभानता, लयबद्धता, संबंधबोध
2. विज्ञान	सूर्य में तेरह लाख पृथ्वी समाने की क्षमता। सूर्य के कद की विशलता	ब्रह्मांड	छोटी बडी चीज की तुलना उदा. एक कमरे में कितने बोक्स रखे जाय, स्व अस्तित्व का स्थान	विस्मय, असीमता, जिज्ञासा, पींड-ब्रह्मांड संबंध
3. भूगोल	ऋतुचक्र	ऋतुओं	परिवर्तन अवलोकन विशेषता, नोंध	संवेदना सहजीवनबोध, अवधान, सभानता, एक्यबोध
4. कला	संगीत	कला	मन की स्थिति का अवलोकन और नोंध	अवधान, सभानता, निरीक्षण, आनंद
5. अन्य	स्वः आदत, क्रियाओं	स्व अस्तित्व	प्रतिकुल परिस्थिति में मन का अवलोकन, व्यवस्था बदलाव	निरीक्षण, तप, संघर्षक्षमता

विवरण:

उपरोक्त तालिका में अनुभूति आधारित पाठयोजना दर्शाई गई है। जिसमें चार विभाग है। प्रथम विभाग में विषयवस्तु है, दूसरे में विषयवस्तु किससे संलग्न है वह उनका अध्ययन माध्यम बनता है, तीसरा विभाग अनुभूति के लिए प्रवृत्ति का उल्लेख है और अंतीम भाग में अनुभूति दौरान अध्येता की कौन सी शक्ति को विकसित होने की संभावना है उनका उल्लेख किया गया है।

प्रथम उदाहरण में गुजराती काव्य की पंक्तियों पसंद की है। इस पंक्ति में कवि ने प्रकृति प्रति अपनी संवेदनशीलता और अभिन्नता की अनुभूति को अभिव्यक्त किया है। यहाँ अध्ययन का विषयवस्तु प्रकृति संलग्न है इसीलिए अध्ययन का माध्यम प्रकृति बनती है। अनुभूति शिक्षा व्यवहार में ब्रह्मांड, आकाश, कला, सहजीवन, ऋतु, पक्षीजगत आदि अध्ययन के माध्यम बन सकतें है। अध्येता को स्वानुभूति के लिए स्व अवलोकन तथा निरीक्षण की प्रवृत्ति की गई है। लेकिन प्रवृत्ति केवल एक उदाहरण है। यहाँ विषयवस्तु में छूपी अनुभूतिक्षमता को पहचानकर शिक्षक कोई भी मौलिक प्रवृत्ति करवा सकता है। इस प्रवृति में सामिल होने से अध्येता को संवेदनशीलता. अवधान, सभानता, प्रकृति- स्व संबंधबोध जैसी शक्तियों को विकसित होने का अवसर मिलता है। हमे पाठ्य विषयों और वर्गखंड व्यवस्था तथा शालेय पर्यावरण का अध्येता की अनुभूति अर्थे विनियोग करना चाहिए।

शिक्षक के लिए:

- विषयवस्तु में अध्येता की कौन सी शक्ति विकसित करने की क्षमता है उसे पहचानना चाहिए।
- छात्रों को अपनी अंदर झाँकने का अवसर मिले ऐसी प्रवृत्तिओं और वर्गव्यवहार का आयोजन करना चाहिए।
- शिक्षक द्वारा छात्र में रुढ आवतों को तोडने के लिए छात्र को कठिन, संघर्षमय पर्यावरण देना चाहिए।
- स्पर्धा और तुलना से अहं पोषित होता है इसीलिए कोई भी स्पर्धा का आयोजन नहीं करना चाहिए उसके बदले वक्तृत्व सभा, संगीत सभा, चित्र प्रदर्शन जैसी प्रवृतियों का आयोजन करना चाहिए।
- निरीक्षण, ध्यान जैसी प्रक्रिया को भी वर्गव्यवहार में स्थान देना चाहिए।

समाज और माता-पिता के लिए:

- बच्चे की परीक्षाक्षी सिद्धि को सर्वस्व नहीं मान लेना चाहिए और ऐसे विद्यालयों को उत्तम विद्यालय नहीं मान लेना चाहिए।
- अपना बच्चा केवल ज्ञान और कौशल के लिए ही शिक्षा प्राप्त करे ऐसा नहीं किन्तु वह विकारों से मुक्त, उर्जावान, स्वस्थ मनुष्य बने ऐसी अपेक्षा रखनी चाहिए।
- केवल परिणाम के लिए नहीं परन्तु प्रकृति (स्वभाव) परिवर्तन के लिए कार्य करे ऐसे विद्यालयों को अनुमोदन देना चाहिए और अपने बच्चे को इसमें भर्ती करवाने का आग्रह रखना चाहिए।

संदभ: (विमला ठकार के पुस्तको की सूचि) :

१. शिक्षण द्वारा समग्र क्रान्ति (१९८२) (संपा. उर्मिलाबहन) विमल प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद |

२, 'शिक्षण द्वारा समग्र क्रान्ति,' (१९८२) ,(संपा. उर्मिलाबहन) विमल प्रकाशन ट्रस्ट अहमदाबाद |

३. 'जीवनयोग', (१९८४), (अनु. बचुभाई सुतरिया),बालगोविंद प्रकाशन ट्रस्ट अहमदाबाद।

४. 'समग्रतानु शिक्षण',(१९८४),(अनु. बालकृष्ण वैद्य), विमल प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद |

५. ' विमल',(१९८८),(अनु. बालकृष्ण वैद्य), विमल प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद

६. 'शिक्षण :चैतन्य संक्रमण',(१९८८), विमल प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद |

७. 'शिक्षण द्वारा समग्र क्रान्ति', (१९८२) (संपा. उर्मिलाबहन) विमल प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद |

८. अध्यात्म का पार्श्वजन्य (१९८५) विमल प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद।

९. मन के उस पार (१९८१) विमल प्रकाशन ट्रस्ट, अहमदाबाद।